नमामि गंगे परियोजना के अंतर्गत उत्तर प्रदेश के श्रृंगवेरपुर, इलाहाबाद में दिनांक 5 दिसम्बर 2017 को आयोजित रैंचिंग कार्यक्रम पर एक रिपोर्ट

दिनांक 5 दिसम्बर 2017 को भाकृअनुप–केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र इलाहाबाद द्वारा श्रृंगवेरपुर में नमामि गंगे (एन एम सी जी) के अन्तर्गत गंगा नदी में विलुप्त हो रहे मत्स्य प्रजातियों और जैवविविधता के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में भारतीय प्रमुख कार्प मछलियों (कतला, रोहू एवं मृगल) के 7500 बीजों को नदी में रैंचिग प्रोग्राम के तहत छोड़ा गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में संस्थान के केन्द्राधीक्षक, डा० आर एस श्रीवास्तव ने समारोह में आये हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। उनहोंने नमामि गंगे के अन्तर्गत आयोजित होने वाली इस परियोजना के बारे में विस्तृत रूप से बताया एवम् विलुप्त हो रहीं प्रजातियों और संकटग्रस्त जैवविविधता के वैज्ञानिक कारणों की जानकारी दी। डा0 श्रीवास्तव ने बताया कि गंगा नदी पर उत्तर काशी से गंगा सागर तक समस्त बाँधों व बैराज के निर्माण की वजह से गंगा की अविरल धारा बाधित हुई है जिससे गंगा के जलीय जीव जन्तुओं के प्रजनन और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इस कारण से मछलियों के आवास तथा प्रवास पर भी गंभीर असर पड़ा है। साथ ही, प्रदूषण भी मछलियों के विलुप्त होने की एक वजह बन गयी है। परिणामस्वरूप, जैव विविधता खत्म होने के कगार पर है और गंगा की मत्स्य प्रजातियों की संख्या में 10 से 90 प्रतिशत की कमी आयी है। आज की स्थिति में महत्वपूर्ण मछलियां या तो विलुप्त हो चुकी हैं या उनकी संख्या में भारी गिरावट आयी है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा० बि. के. दास ने केन्द्र के इस प्रयास पर बधाई दी तथा अपने संदेश में उन्होंने बताया कि परियोजना का उद्देश्य गंगा नदी में विलुप्त हो रही मत्स्य प्रजातियों को रैंचिग के द्वारा संरक्षण एवम् संवर्धन करना है तथा इसी लक्ष्य के साथ इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। समारोह में इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, मत्स्य विभाग उत्तर प्रदेश, वन अनुसंधान संस्थान, एन जी ओ आदि से आए हुए, अध्यापकों, वैज्ञानिकों तथा अधिकारियों ने गंगा और मत्स्य के महत्व पर अपने विचार प्रकट किये तथा बढ़ते प्रदूषण एवम् कम हो रहीं मछलियों की संख्या को एक चिंताजनक स्थिति कहा। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के छात्र, आस–पास के गाँवों के मत्स्य पालक, मत्स्य व्यवसायी तथा गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लोगों ने भी भाग लिया। अन्त में, संस्थान के वैज्ञानिक, डा० डी. एन. झा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए यह आश्वस्त किया कि समाज की भागीदारी से हम इस परियोजना के उद्देश्यों को पाने में सफल हो सकेंगे। डा० झा ने सूचित किया कि इस साल हमारी योजना के तहत रैंचिंग प्रोग्राम के द्वारा गंगा नदी में लगभग एक करोड़ से अधिक मत्स्य बीजों को इस उम्मीद के साथ छोड़ा जायेगा कि गंगा नदी में मछलियों की संख्या बढ़ेगी और मछुआरों के आय उपार्जन मे वृद्धि से उनको लाभ होगा।

श्रृंगवेरपुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में रैंचिंग कार्यक्रम

(बि. के. दास)
निदेशक